Faizane Shaikh Abu Bakr Shibli (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 308
Weekly Booklet : 308

शजरए आलिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिया के
एक बुज़ुर्ग का तज़्किरा बनाम

फ़ैज़ाने शैख़ अबू बक्र शिब्ली رحمۃ اللہ علیہ

सफ़हात 24

आशिक़े दुरूदो सलाम का मक़ाम 02
चार हज़ार अह़ादीस में से सिर्फ़ एक ? 16
वफ़ात शरीफ़ के वक़्त भी सुन्नत पर अमल 19
शैख़ शिब्ली के चन्द फ़रामीन 20

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने शैख़ अबू बक्र शिब्ली** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सिने त़बाअ़त : ज़िल क़ा'दह **1444** हि., जून **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने शैख़ अबू बक्र शिब्ली** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 21 सफ़्हात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने शैख़ अबू बक्र शिब्ली** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले उसे दुन्या की मह़ब्बत से बचा, इख़्लास के साथ नेकियां करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला अ़त़ा फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के मश्हूर बुज़ुर्ग, ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपने फ़ौत शुदा पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? वोह बोला : मुझे बड़ी सख़्तियों से वासित़ा पड़ा, मुन्कर नकीर (क़ब्र में इम्तिह़ान लेने वाले फ़िरिश्तों) के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : दुन्या में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्ति'माल की वज्ह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है। अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते मेरी त़रफ़ बढ़े, इतने में एक साह़िब जो बड़े ख़ूब सूरत और ख़ुश्बूदार थे, वोह मेरे और अ़ज़ाब के दरमियान आ गए और उन्हों ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिये और मैं ने उसी त़रह़ जवाबात दे दिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अ़ज़ाब मुझ से दूर हुवा। मैं ने उन बुज़ुर्ग से अ़र्ज़

की : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : तुम्हारे बहुत ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी मदद करने की ज़िम्मेदारी दी गई है। (القول البدیع، ص260)

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अ़ला हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते !

سُبْحٰنَ الله ! कस्रते दुरूद शरीफ़ की बरकत से मदद करने के लिये क़ब्र में जब फ़िरिश्ता आ सकता है तो तमाम फ़िरिश्तों के भी आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم करम क्यूं नहीं फ़रमा सकते ! किसी ने बिल्कुल बजा तो फ़रियाद की है :

मैं गोर अंधेरी में घबराऊंगा जब तन्हा इमदाद मेरी करने आ जाना मेरे आक़ा
रोशन मेरी तुरबत को लिल्लाह शहा करना जब नज़्अ़ का वक़्त आए दीदार अ़त़ा करना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आ़शिक़े दुरूदो सलाम का मक़ाम

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने दुरूदे पाक की बरकत देखी ? काश ! हम भी दुरूदे पाक पढ़ते रहा करें। सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के बारहवें (12th) पीरो मुर्शिद, ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में जो मक़ाम था उस का अन्दाज़ा इस वाक़िए़ से लगाइये : ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन बग़दाद शरीफ़ के बहुत बड़े आ़लिम ह़ज़रते अबू बक्र बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने फ़ौरन खड़े हो कर उन

को गले लगा लिया और पेशानी चूम कर बड़ी ता'ज़ीम के साथ अपने पास बिठाया, हाज़िरीन ने अ़र्ज़ किया : या सय्यिदी ! आप और अहले बग़दाद कल तक इन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज इन की इस क़दर ता'ज़ीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही ऐसा नहीं किया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! आज रात मैं ने ख़्वाब में येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि अबू बक्र शिब्ली बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर इन को सीने से लगा लिया और पेशानी को चूम कर अपने पहलू में बिठा लिया । मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शिब्ली पर इस क़दर शफ़्क़त की वज्ह ? **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया कि येह हर नमाज़ के बा'द येह आयत पढ़ता है :

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾﴾

(پ11، التوبہ:128) और इस के बा'द मुझ पर दुरूद पढ़ता है । (القول البدیع، ص346)

बे अ़दद और बे अ़दद तस्लीम बे शुमार और बे शुमार दुरूद
बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 124)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को रोज़ाना पढ़ने के लिये बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم का जो शजरा शरीफ़ अ़त़ा फ़रमाया है उस में ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के वसीले से यूं दुआ़ की गई है :

बहरे शिब्ली शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा   एक का रख अ़ब्दे वाहि़द बे रिया के वासिते़

अल्फ़ाज़ मआ़नी : **बहर :** वासिते़। **शेरे ह़क़ :** **अल्लाह** पाक के शेर। **दुन्या के कुत्ते :** दुन्या के ह़रीस। **बे रिया :** मुख़्लिस बन्दा।

दुआ़इया शे'र का मफ़्हूम : ऐ **अल्लाह** पाक! ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली जो तेरे नेक व परहेज़ गार बन्दे और शेर हैं, इन के वासिते़ मुझे दुन्या के ह़रीसों और लालचियों से बचा। मुझे इन के ख़लीफ़ा ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वाहि़द तमीमी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ के सदक़े एक ही दर का मुख़्लिस ग़ुलाम बना।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अ़रबी शजरा

अ़ज़ीम आ़शिके़ सह़ाबा व अहले बैत, इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने एक त़वील अ़रबी शजरा, ब सीग़ए दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं : "اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَیْهِ وَعَلَیْهِمْ وَعَلَی الْمَوْلَی الشَّیْخِ اَبِیْ بَکْرِ نِالشِّبْلِیْ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ"

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! तू हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर, आप की आल व अस्ह़ाब पर और शैख़ व मौला ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ पर दुरूदो सलाम भेज और बरकत नाज़िल फ़रमा।

(तारीख़ व शर्हे शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 109)

तआ़रुफ़ और विलादत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ की विलादत (Birth) 247 हि. में बग़दाद शरीफ़ के क़रीब "सामरा" नामी अ़लाके़ में हुई। आप رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ का नाम मुबारक "जा'फ़र"

और कुन्यत "अबू बक्र" है। शिब्ला या शबीला के अ़लाक़े में रहने की वज्ह से आप को "शिब्ली" कहा जाता है। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 202) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को **अल्लाह** पाक के मुबारक नाम से बड़ी मह़ब्बत थी, जहां कहीं लफ़्ज़ "**अल्लाह**" लिखा देखते फ़ौरन चूम लेते। (مسالک السالکین، 318/1) **अल्लाह** पाक ने आप की आंखों से पर्दे उठा दिये थे आप ख़ुद फ़रमाते हैं : मैं बाज़ार जाता हूं तो वहां मौजूद लोगों की पेशानी पर सईद (या'नी ख़ुश बख़्त) और शक़ी (या'नी बद बख़्त) लिखा हुवा पढ़ लेता हूं। (تذکرۃ الاولیاء، 141/2)

बादशाही ख़िल्अ़त

ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने 30 साल इल्मे दीन ह़ासिल कर के फ़िक़्ह व ह़दीस में बुलन्द मक़ाम पाया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मालिकी थे, ह़दीसे पाक की मश्हूर किताब "मुअत्ता़ इमाम मालिक" आप को ज़बानी याद थी। (तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 202) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम बादशाह की त़रफ़ से एक अ़लाक़े के अमीर थे। इल्मे दीन ह़ासिल करने के बा'द आप को भी वालिदे मोह़तरम की त़रह़ नहावन्द (एक अ़लाक़े का नाम) की गवर्नरी का ओ़हदा मिला। एक मरतबा बादशाह ने तमाम उमरा को अपने हां बुला कर सब को ख़िल्अ़त (या'नी क़ीमती लिबास) से नवाज़ा। इत्तिफ़ाक़ से एक अमीर को छींक आई, उस ने बादशाह की त़रफ़ से मिलने वाली ख़िल्अ़त से नाक साफ़ कर लिया, बादशाह को बड़ा ग़ुस्सा आया, उस ने उसे मा'ज़ूल कर के उस से ख़िल्अ़त वापस ले ली। ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बादशाह के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : ऐ बादशाह! तू एक मख़्लूक़ है, तू पसन्द नहीं करता कि तेरे दिये

हुए इन्आ़म की कोई बे अदबी करे तो सारे जहान के मालिको मौला ने मुझे अपनी दोस्ती की ने'मत से नवाज़ा है, वोह कब पसन्द करेगा कि मैं उस की इस अ़ज़ीम ने'मत को ज़ाएअ़ करूं ! येह फ़रमा कर आप वहां से बाहर आए और ओ़हदे को ख़ैरबाद कह कर ह़ज़रते ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की महफ़िल में ह़ाज़िर हो कर तौबा की। इन्हों ने आप को वक़्त के बहुत बड़े वलिय्ये कामिल बल्कि औलियाए किराम के सरदार ह़ज़रते अबुल क़ासिम जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने का फ़रमाया, आप ने उन के हाथ पर बैअ़त कर के ख़ूब इ़बादतो रियाज़त की फिर आप को ख़िलाफ़त से भी नवाज़ा गया। (شریف التواریخ، 1/583، 584 ملتقطاً۔ مسالک السالکین، 1/316 ملخصاً)

उन का मंगता पाउं से ठुकरा दे वोह दुन्या का ताज
जिस की ख़ातिर मर गए मुन्अ़म रगड़ कर एड़ियां

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 86)

अल्फ़ाज़ मआ़नी : **दुन्या का ताज :** ओ़हदा व मन्सब। **मुन्अ़म :** ने'मतों वाले।

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस शे'र का मत़लब है : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़क़ीर दर अस्ल सब से बड़ा अमीर है कि वोह दुन्या के बड़े बड़े ओ़हदों जिसे ह़ासिल करने के लिये लोग एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर जाते हैं, उन्हें अपने पाउं की ठोकर पर रखता है। एक शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

मैं बड़ा अमीरो कबीर हूं, शहे दो सरा का असीर हूं
दरे मुस्त़फ़ा का फ़क़ीर हूं, मेरा रिफ़्अ़तों पे नसीब है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ज़रते शिब्ली ने सज्दे में दुआ मांगी (वाक़िआ़)

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! अल्लाह पाक के नेक बन्दों को दुन्यावी तख़्तो ताज, दुन्यावी मालो अस्बाब की ख़्वाहिश नहीं होती, बल्कि येह तो **अल्लाह** पाक से ग़ाफ़िल कर देने वाली दुन्या और इस के माल व जन्जाल से दूर भागते हैं। जैसा कि ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक दुन्या में फंसे (या'नी दुन्यादार) आदमी को देखा तो सज्दे में गिर गए और येह दुआ पढ़ी : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا۔''

तरजमा : अल्लाह पाक का शुक्र है जिस ने मुझे उस मुसीबत से आ़फ़ियत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/389)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब किसी दुन्यादार को देखते तो (माले दुन्या के वबाल से बचने के लिये) पढ़ते : ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْعُقْبٰی या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में दर गुज़र और आ़फ़ियत का सुवाल करता हूं।'' (مرقاۃ المفاتیح، 9/95)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं :

ताजो तख़्तो ह़ुकूमत मत दे कसरते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 123)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

www.dawateislami.net

एह्सान का बदला

हज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन अपने चालीस मुरीदों के क़ाफ़िले के हमराह शहरे बग़दाद से बाहर तशरीफ़ ले गए, एक मक़ाम पर पहुंच कर आप ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक अपने बन्दों के रिज़्क़ की कफ़ालत करने वाला है, फिर आप ने पारह 28 **सूरतुत्त़लाक़** की दूसरी और तीसरी आयते करीमा का येह हिस्सा तिलावत फ़रमाया :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ

(پ28،الطلاق:2،3)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे, **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

येह फ़रमाने के बा'द मुरीदों को वहीं छोड़ कर आप कहीं तशरीफ़ ले गए। तमाम मुरीदीन तीन रोज़ तक वहीं भूके पड़े रहे। चौथे दिन हज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वापस तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक ने बन्दों के लिये रिज़्क़ तलाश करने की इजाज़त दी है। (चुनान्चे पारह 29 **सूरतुल मुल्क** की आयत नम्बर 15 में) इर्शाद होता है : ﴿هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا وَ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (या'नी ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो और **अल्लाह** की रोज़ी में से खाओ।"

इस लिये तुम अपने में से किसी को भेज दो, उम्मीद है कि वोह कुछ न कुछ खाना ले कर आएगा। मुरीदों ने एक ग़रीब शख़्स को बग़दाद भेजा, वोह गली गली फिरता रहा, मगर रोज़ी मिलने की कोई राह पैदा न हुई, थक हार कर एक जगह बैठ गया, क़रीब ही एक ग़ैर मुस्लिम त़बीब का मत़ब

(दवाख़ाना) था, वोह त़बीब बड़ा माहिर नब्बाज़ था, सिर्फ़ नब्ज़ देख कर मरीज़ का ह़ाल ख़ुद ही बता देता था। सब चले गए तो उस ने इस **अल्लाह** वाले को भी मरीज़ समझ कर बुलाया और नब्ज़ देखी फिर रोटियां सालन और ह़ल्वा मंगवाया और पेश करते हुए कहा : तुम्हारे मरज़ की येही दवा है। दरवेश ने त़बीब से कहा : इसी त़रह़ के 40 मरीज़ और भी हैं। त़बीब ने ग़ुलामों के ज़रीए़ चालीस अफ़राद के लिये ऐसा ही खाना मंगवा कर **अल्लाह** वाले के साथ रवाना कर दिया और ख़ुद भी छुप कर पीछे पीछे चल दिया। जब शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में खाना ह़ाज़िर किया गया तो आप ने खाने को हाथ नहीं लगाया और फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** के नेक बन्दो ! इस खाने में तो अ़जीब राज़ छुपा हुवा है, खाना लाने वाले ने सारा वाक़िआ़ सुनाया। शैख़ ने फ़रमाया : एक ग़ैर मुस्लिम ने हमारे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया है, क्या हम उस का बदला दिये बिग़ैर यूं ही खाना खा लें ? मुरीदों ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! हम ग़रीब लोग उसे क्या दे सकते हैं ? ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : खाने से पहले उस के ह़क़ में दुआ़ तो कर सकते हैं, चुनान्चे दुआ़ की गई, हाथों हाथ दुआ़ की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि वोह ग़ैर मुस्लिम त़बीब जो सारी बातें छुप कर सुन रहा था उस के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, उस ने फ़ौरन अपने आप को शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में पेश कर दिया, तौबा कर के कलिमए शहादत पढ़ कर मुसल्मान हो गया और शैख़ के मुरीदों में शामिल हो कर बुलन्द मक़ाम पर पहुंच गया। (روض الریاحین، ص157 ملخصًا) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

वली की ख़िदमत रंग लाती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم का नेकी की दा'वत का अन्दाज़ किस क़दर निराला होता है ! इन की ख़िदमत करने वाला कभी ख़ाली नहीं लौटता । येह भी मा'लूम हुवा कि जब कोई हुस्ने सुलूक करे तो उस को दुआ़ओं से नवाज़ना चाहिये । नीज़ अगर कोई ग़ैर मुस्लिम एह़सान कर दे तो उस के ह़क़ में दुआ़ए हिदायत करनी चाहिये । ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और आप के मुरीदीन की दुआ़ए हिदायत रंग लाई और اَلْحَمْدُلِلّٰه इन की ख़िदमत करने वाला ग़ैर मुस्लिम त़बीब ईमान की दौलत से मालामाल हो गया ।

दुआ़ए वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

एक त़बीब की हिदायत का ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़

एक और ग़ैर मुस्लिम त़बीब की हिदायत का ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ पढ़िये : ह़ज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक मरतबा बहुत बीमार हो गए । लोग आप को इ़लाज के लिये एक शिफ़ाख़ाने ले गए । बग़्दाद शरीफ़ के वज़ीर अ़ली बिन ईसा ने आप की ह़ालत देखी तो फ़ौरन बादशाह से राबित़ा किया कि वोह कोई तजरिबा कार त़बीब भेजे । बादशाह ने एक ग़ैर मुस्लिम माहिर त़बीब को भेज दिया । उस ने ह़ज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इ़लाज के लिये बहुत कोशिशें कीं लेकिन आप ठीक न हुए । एक दिन त़बीब कहने लगा : अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि मेरे गोश्त के टुकड़े से आप को शिफ़ा मिल जाएगी तो अपने जिस्म का गोश्त काट कर देना भी मुझ पर ज़ियादा मुश्किल न होता । येह सुन कर शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरा इ़लाज इस से भी कम में हो सकता है ।" डॉक्टर

ने पूछा : वोह क्या ? इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान हो जाओ। येह सुन कर वोह मुसल्मान हो गया और उस के मुसल्मान होने पर ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी तन्दुरुस्त हो गए। (روض الریاحین، ص 158)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने फ़ारसी कलाम में ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं :

شبلیا اے شبلِ شیر کبریا اِمداد کُن

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 329)

तरजमा : ख़ुदा के शेर के शेर बेटे ऐ ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली ! मेरी मदद कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम एक सच्चा मज़्हब है, जो ऐन फ़ित्रते इन्सानी के मुत़ाबिक़ है। लोगों को इस्लाम की त़रफ़ बुलाना तमाम नबियों, रसूलों की सुन्नत है, क्यूं कि तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को दुन्या में भेजने का बुन्यादी मक़्सद लोगों को कुफ़्र के अंधेरों से निकाल कर दीने इस्लाम के नूर में दाख़िल करना था। इस वाक़िए़ में ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नेकी की दा'वत की ज़बर दस्त कुढ़न भी ज़ाहिर हो रही है। उस के मुसल्मान होते ही आप ख़ुशी में तन्दुरुस्त हो गए। गोया जिस्मानी इ़लाज की ग़रज़ से आने वाले एक रूह़ानी व जिस्मानी बीमार को कुफ़्र की अंधेरी ग़ार से निकाल कर इस्लाम की दौलत

से नवाज़ कर फ़ैज़याब करना था। नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने का ज़ेह्न बनाइये और बिगड़े हुए लोगों को नेक बनाने का सामान कीजिये।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो

सुन्नत से मह़ब्बत का अ़ज़ीम जज़्बा

ह़ज़रते अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : एक बार ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को वुज़ू के वक़्त मिस्वाक की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने के सिक्के) में मिस्वाक ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने अ़र्ज़ किया : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी मिस्वाक ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** पाक के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी ह़ैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि तू ने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं छोड़ी ? मैं ने तुझे जो मालो दौलत दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इतनी अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ? (لواقح الانوار، ص38 ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! प्यारे प्यारे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की सुन्नते मिस्वाक से मह़ब्बत का मुन्फ़रिद अन्दाज़ मरह़बा सद मरह़बा। काश ! हम भी ह़क़ीक़ी मा'नों में सच्चे आ़शिक़ाने रसूल और सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन जाएं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रिक़्क़त अंगेज़ ह़ज

ह़ज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब ह़ज के लिये मैदाने अ़रफ़ात शरीफ़ पहुंचे तो बिल्कुछ चुप रहे, सूरज ग़ुरूब होने तक कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकाला, जब दौराने सई, मीलैने अख़्ज़रैन से आगे बढ़े तो आंखों से आंसू बहने लगे, रोते हुए उन्हों ने अ़रबी में अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा येह है :

﴾1﴿ मैं चल रहा हूं इस ह़ाल में कि मैं ने अपने दिल पर तेरी मह़ब्बत की मोह़र लगा रखी है ताकि इस दिल पर तेरे सिवा किसी का गुज़र न हो।

﴾2﴿ ऐ काश ! मुझ में येह इस्तिक़ामत होती कि मैं अपनी आंखों को बन्द रखता और उस वक़्त तक किसी को न देखता जब तक तुझे न देख लेता।

﴾3﴿ जब आंखों से आंसू निकल कर रुख़्सारों पर बहने लगते हैं तो ज़ाहिर हो जाता है कि कौन वाक़ेई रो रहा है और किस का रोना बनावटी है।

(روض الریاحین، ص100) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

बादशाह का इलाज

अल्लाह वाले जिस्मानी अमराज़ व दुन्यावी मसाइल से घबराया नहीं करते बल्कि औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم चाहें तो **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से बड़े से बड़े बीमार जिन्हें सारे डॉक्टरों ने जवाब दे दिया हो पलक झपक्ने में ठीक कर दें, जैसा कि एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बीमार हो गए, बहुत इलाज करवाया मगर शिफ़ा न मिल सकी, इसी ह़ालत में छे महीने गुज़र गए। एक दिन उन्हें पता चला कि ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उन के महल के पास से गुज़र रहे हैं तो आप ने उन्हें अपने पास तशरीफ़ लाने की दरख़्वास्त की। जब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

तशरीफ़ लाए तो उन्हें देख कर इर्शाद फ़रमाया : फ़िक्र न करो, **अल्लाह** पाक की रह़मत से आज ही आराम आ जाएगा। फिर आप ने दुरूदे पाक पढ़ कर बादशाह के जिस्म पर हाथ फेरा तो वोह उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गए। (راحت القلوب (فارسی)، ص50) ऐसे ही बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के बारे में शायद डॉक्टर इक़्बाल ने लिखा है :

न पूछ इन ख़िर्क़ा पोशों की, इरादत हो तो देख इन को
यदे बैज़ा लिये बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दीने मुह़म्मदी के जल्वे

ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं एक मरतबा मक्कए पाक से मुल्के शाम जा रहा था, रास्ते में मेरी मुलाक़ात एक राहिब (या'नी ईसाइयों के आ़लिम) से हुई। वोह एक गिरजा (या'नी अपने इबादत ख़ाने) में था। मैं ने उस से पूछा : तू ने अपने आप को लोगों से अलग थलग इस गिरजा में क्यूं क़ैद कर रखा है ? उस ने जवाब दिया : मैं यहां अकेला इस लिये रहता हूं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इबादत कर सकूं और दुन्या के काम मेरी इबादत में रुकावट न बनें। मैं ने पूछा : तू किस की इबादत करता है ? उस ने जवाब दिया : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की। मैं ने कहा : क्या वज्ह है कि तू मा'बूदे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** पाक की इबादत छोड़ कर उस के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की इबादत करता है ह़ालां कि इबादत के लाइक़ तो सिर्फ़ और सिर्फ़ "**अल्लाह**" है ? उस ने कहा : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने चालीस दिन और चालीस रातें बिग़ैर खाए पिये गुज़ार दीं। मैं ने उस से पूछा : जो शख़्स चालीस दिन और चालीस रातें बिग़ैर खाए पिये भूका प्यासा गुज़ार दे तो

क्या वोह "ख़ुदा" बन जाता है ? उस ने कहा : हां ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : मैं यहां तेरे साथ रहता हूं, तुम गिनना कि मैं कितने दिन तक बिग़ैर खाए पिये रह सकता हूं। चुनान्चे मैं दिन रात **अल्लाह** पाक की इबादत में मश्ग़ूल रहता, न कुछ खाता न पीता, इस त़रह़ जब चालीस दिन और चालीस रातें गुज़र गईं तो मैं ने उस से कहा : अगर तू चाहे तो मैं मज़ीद कुछ दिन बिग़ैर खाए पिये गुज़ार सकता हूं। राहिब ने जब मेरी येह ह़ालत देखी तो पूछा : तुम्हारा दीन कौन सा है ? मैं ने कहा : मैं **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती हूं, मैं उन का बहुत छोटा ग़ुलाम हूं और हमारा दीन "इस्लाम" है। राहिब मेरे पास आया, उस ने अपने मज़हब से तौबा की और कलिमा पढ़ कर दामने इस्लाम से वाबस्ता हो गया। फिर मैं उसे अपने साथ दिमश्क़ ले आया और वहां के लोगों से कहा : ऐ लोगो ! अपने इस नए मुसल्मान भाई की ख़ूब ख़ैर ख़्वाही करना और इसे किसी क़िस्म की परेशानी न होने देना। फिर मैं चन्द दिन दिमश्क़ में रहा और वहां से कूच कर गया। वोह शख़्स हर वक़्त **अल्लाह** पाक की इबादत में मश्ग़ूल रहता फिर जब मैं वापस आया तो उसे इस ह़ाल में पाया कि उस का शुमार औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم में होने लगा। (उ़यूनुल ह़िकायात, 1/189 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उस के ज़ोरे बाज़ू का — निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़्दीरें

शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के नज़्दीक ज़कात का निसाब

इब्ने बश्शार लोगों को ह़ज़रते शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास बैठने और उन की बातें सुनने से मन्अ़ करते, एक दिन ख़ुद इब्ने बश्शार उन का

इम्तिहान लेने हाज़िर हुए। इब्ने बश्शार ने कहा : पांच ऊंटों में कितनी ज़कात है ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ामोश रहे, उन्हों ने बार बार सुवाल किया तो आप ने फ़रमाया कि शर्अ़ शरीफ़ के मुताबिक़ एक बकरी वाजिब है जब कि हमारे जैसों के लिये हुक्म है कि सब ज़कात में दे दिये जाएं। इब्ने बश्शार ने पूछा : इस बारे में आप का कोई इमाम है ? फ़रमाया : हां ! पूछा कौन ? फ़रमाया : हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه, क्यूं कि आप ने सारे का सारा माल ख़ैरात कर दिया। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से फ़रमाया कि तू ने अपने अहलो इ़याल के लिये कुछ पीछे छोड़ा ? अ़र्ज़ की : **अल्लाह** और उस का रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। इब्ने बश्शार इस हाल में वापस लौटे कि इस के बा'द किसी को शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास आने से मन्अ़ न किया। (طبقات کبریٰ للشعرانی، 1/149)

मैं सब दौलत रहे हक़ में लुटा दूं शहा ऐसा मुझे जज़्बा अ़ता हो

चार हज़ार अहादीस में से सिर्फ़ एक ?

हज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चार सो उ़लमाए किराम की ख़िदमत में रह कर इ़ल्मे दीन हासिल किया। आप फ़रमाते हैं : मैं ने चार हज़ार अहादीसे मुबारका पढ़ीं, फिर मैं ने उन में से एक हदीसे पाक को मुन्तख़ब किया और उस पर अ़मल किया क्यूं कि मैं ने उस हदीसे पाक में ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र किया तो अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारा और अपनी नजात व काम्याबी उसी में पाई। वोह हदीसे मुबारका येह है : रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इर्शाद फ़रमाया : जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अ़र्सा क़ब्रो आख़िरत में रहना है उतनी क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल हो जाओ और **अल्लाह** पाक

के लिये उतना अ़मल करो जितने तुम उस के मोह़ताज हो और जहन्नम की आग के लिये उतना अ़मल करो जितनी तुम में बरदाश्त करने की त़ाक़त है। (ایہاالولد، ص17)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

औलियाए किराम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم की ख़िदमत करने वाला

ह़ज़रते शिब्ली رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मक्के में एक आ'राबी (या'नी अ़रब के दीहाती) को सूफ़ियाए किराम की ख़िदमत करते हुए देखा तो इस का सबब पूछा। उस ने बताया : मैं वीराने से गुज़र रहा था कि मैं ने एक ग़ुलाम को देखा जो नंगे पाउं, नंगे सर था। उस के पास सफ़र का सामान, पानी का मश्कीज़ा वग़ैरा कुछ न था। मैं ने अपने दिल में कहा कि मैं इस से मिलता हूं, अगर येह भूका होगा तो इसे खाना खिलाऊंगा और अगर प्यासा होगा तो पानी पिलाऊंगा। फिर मैं उस के पीछे पीछे चल दिया यहां तक कि हम दोनों के दरमियान एक हाथ का फ़ासिला रह गया, मगर अचानक वोह मुझ से दूर होना शुरूअ़ हो गया ह़त्ता कि मेरी नज़रों से ग़ाइब हो गया। मैं ने दिल में सोचा कि शायद येह शैत़ान था। तो एक आवाज़ आई : नहीं ! बल्कि येह दीवाना था। मैं ने बुलन्द आवाज़ से इल्तिजा की : ऐ फ़ुलां ! मैं तुझे उस ज़ाते पाक का वासित़ा देता हूं जिस ने ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सच्चा नबी बना कर भेजा है, ज़रा मेरी बात सुनिये। तो उन्हों ने फ़रमाया : ऐ जवान ! तू ख़ुद भी थका और मुझे भी थका दिया। मैं ने कहा : मैं आप को अकेला पा कर आप की ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हुवा था। उन्हों ने फ़रमाया : जिस के साथ ख़ुदा हो वोह अकेला कैसे हो सकता है ? मैं ने पूछा : मुझे आप के पास कोई तोशा (या'नी सामान) भी नज़र नहीं आया, तो उन्हों ने फ़रमाया : जब मुझे भूक लगती है तो ज़िक्रे इलाही मेरा तोशा बन जाता है और जब मुझे प्यास लगती है तो **अल्लाह**

पाक का दीदार मेरा सुवाल और मत्लूब बन जाता है। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे भूक लगी है, खाना खिला दीजिये। तो उन्हों ने पूछा : क्या तुम औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की करामात नहीं मानते ? मैं ने कहा : क्यूं नहीं ! मगर मैं इत्मीनाने क़ल्ब के लिये येह बातें पूछ रहा हूं। उन्हों ने अपना हाथ रेतीली ज़मीन पर मारा और एक मुठ्ठी भर कर मेरी त़रफ़ बढ़ाई और कहने लगे : ऐ धोका खाने वाले ! लो खाओ। मैं ने देखा कि वोह मिट्टी लज़ीज़ तरीन सत्तू बन चुकी थी, मैं ने कहा : कितने लज़ीज़ हैं ! तो वोह बोले : बयाबान में औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को ऐसी बहुत सी ने'मतें ह़ासिल हैं, अगर तू समझे। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे पानी भी पिलाइये। तो उन्हों ने अपना पाउं ज़मीन पर मारा तो शह्द और पानी का चश्मा फूट पड़ा। मैं पानी पीने के लिये चश्मे पर बैठ गया, फिर जब मैं ने सर उठाया तो वोह मुझे नज़र न आए, न जाने वोह कहां ग़ाइब हो गए। लिहाज़ा उस दिन से मैं औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की ख़िदमत में मसरूफ़ हूं, शायद उस जैसे किसी वली की ज़ियारत कर सकूं। (بحر الدموع، ص 74)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अच्छा बोलना ख़ामोश रहने से बेहतर है

"कश्फ़ुल मह़्जूब" में हु़ज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बग़दाद शरीफ़ के एक मह़ल्ले से गुज़रते हुए एक शख़्स को सुना वोह कह रहा था : اَلسُّكُوْتُ خَيْرٌ مِّنَ الْكَلَامِ या'नी ख़ामोशी बोलने से बेहतर है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उसे फ़रमाया : "तेरे बोलने से तेरा ख़ामोश रहना अच्छा है और मेरा बोलना ख़ामोश रहने से बेहतर है।" (کشف المحجوب، ص402ماخوذاً)

रिज़्क़ के मुआ़मले में फ़िक्र मन्द रहने वाले को ख़ूब सूरत जवाब

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास एक शख़्स हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : या सय्यिदी ! मेरे अहलो इ़याल ज़ियादा हैं और रिज़्क़ के अस्बाब कम। आप ने फ़रमाया : अपने घर में दाख़िल हो कर हर उस शख़्स को बाहर निकाल दे जिस का रिज़्क़ तेरे ज़ेहन के मुताबिक़ तेरे ज़िम्मे पर हो और जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर हो उसे रहने दे।

(طبقات کبریٰ للشعرانی، 1/148)

वफ़ात शरीफ़ के वक़्त भी सुन्नत पर अ़मल

ह़ज़रते जा'फ़र बिन मुह़म्मद बिन नसीर बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ख़ादिम बक्रान दैनूरी से पूछा : "वफ़ात शरीफ़ के वक़्त ह़ज़रते शैख़ शिब्ली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की क्या कैफ़िय्यत थी ?" जवाब दिया : "आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि एक शख़्स का दिरहम मेरे ज़िम्मे है जो ज़ुल्म की राह से मेरे पास आ गया था ह़ालां कि मैं उस के मालिक की त़रफ़ से हज़ारों दिरहम सदक़ा कर चुका हूं मगर मुझे सब से ज़ियादा इसी की फ़िक्र खाए जा रही है।" फिर इर्शाद फ़रमाया : "मुझे नमाज़ के लिये वुज़ू करवा दो।" मैं ने वुज़ू करवा दिया लेकिन दाढ़ी में ख़िलाल करवाना भूल गया और चूंकि उस वक़्त आप बोल नहीं पा रहे थे इस लिये मेरा हाथ पकड़ कर अपनी दाढ़ी में दाख़िल कर दिया फिर आप इन्तिक़ाल फ़रमा गए। येह सुन कर ह़ज़रते जा'फ़र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रोने लगे और फ़रमाने लगे : "तुम ऐसे शख़्स के बारे में क्या कहोगे जिस से उ़म्र के आख़िरी लम्ह़े भी शरीअ़त का कोई अदब फ़ौत न हुवा।" (احیاء العلوم، 5/233)

गोया आप इस शे'र के ऐन मिस्दाक़ थे :

तब्लीग़ सुन्नतों की करता रहूं हमेशा मरना भी सुन्नतों में हो सुन्नतों में जीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 191)

इन्तिक़ाल शरीफ़

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ जुमुअ़तुल मुबारक के दिन, 27 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 334 हि. को 88 बरस की उ़म्र में हुवा। आप का मज़ारे पुर अन्वार बग़दाद शरीफ़ में है।

(तज़्किरए मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या, स. 210)

सब औलादे आदम की त़रफ़ से जवाब दे दिया

इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर आप से सुवाल किया कि नकीरैन से आप ने कैसे छुटकारा ह़ासिल किया ? फ़रमाया : जब उन्हों ने मुझ से सुवाल किया कि तेरा रब कौन है ? तो मैं ने जवाब दिया : मेरा रब वोह है जो आदम को पैदा कर के तुम्हें और दूसरे मलाएका को सज्दा करते देख रहा था। येह जवाब सुन कर नकीरैन ने कहा : इस ने तो पूरी औलादे आदम की जानिब ही से जवाब दे दिया और येह कह कर वापस चले गए। (تذکرۃ الاولیاء، 2/153)

"अबू बक्र" के छे ह़ुरूफ़ की निस्बत से 6 फ़रामीने शैख़ शिब्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

﴾1﴿ शुक्र, ने'मत को मद्दे नज़र रखने का नाम नहीं बल्कि ने'मत अ़त़ा फ़रमाने वाले को पेशे नज़र रखने का नाम है। (رسالہ قشیریہ، ص212)

﴾2﴿ मुसल्मान का जब दुन्या से रुख़्सत होने का वक़्त क़रीब आता है तो उस का रंग पीला पड़ जाता है क्यूं कि वोह बारगाहे ख़ुदावन्दी में खड़ा होने से डरता है मुसल्मान जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस का चेहरा चमकदार और रोशन होगा। (طبقات کبریٰ للشعرانی، 1/148)

﴾3﴿ बुरे लोगों की सोहबत की नुहूसत से नेक बन्दों के बारे में बद गुमानी पैदा होती है। (الکواکب الدریۃ،2/86)

﴾4﴿ जो तेरे लिये है वोह तुझ को ज़रूर मिलेगा और जो तेरा नहीं वोह कोशिश से भी न मिलेगा। (شریف التواریخ،ص1/603)

﴾5﴿ क़ुरआने करीम की नसीहतों से फ़ैज़ हासिल करने के लिये दिल ऐसे हाज़िर होना चाहिये कि उस में पलक झपकने की मिक़्दार भी ग़फ़्लत न आए। (تفسیر ثعلبی،پ26،ق،تحت الآیت:37،9/106)

﴾6﴿ हज के दो हुरूफ़ हैं : पहला "हा" और दूसरा "जीम"। "हा" से मुराद हिल्म और "जीम" से मुराद जुर्म है। इस से मुराद येह है कि गोया बन्दा कहता है : ऐ मेरे रब ! मैं तेरे हिल्म और तेरी रहमत की उम्मीद ले कर तेरी बारगाह में अपने जुर्म के साथ हाज़िर हूं अगर तू भी मेरे जुर्म न बख़्शेगा तो कौन बख़्शेगा ? (الروض الفائق،ص57)

फ़ेहरिस्त

क़ब्र में आक़ा क्यूं नहीं आ सकते !.......2
अ़रबी शजरा.......4
एह़सान का बदला.......8
बादशाह का इलाज.......13
शैख़ शिब्ली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के नज़्दीक ज़कात का निसाब.......15
चार हज़ार अह़ादीस में से सिर्फ़ एक ?.......16
रिज़्क़ के मुआ़मले में फ़िक्र मन्द रहने वाले को ख़ूब सूरत जवाब.......19
सब औलादे आदम की त़रफ़ से जवाब दे दिया.......20
"अबू बक्र" के छे हुरूफ़ की निस्बत से
6 फ़रामीने शैख़ शिब्ली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ.......20

www.dawateislami.net

अगले हफ़्ते का रिसाला